छत्तीसगढ़ जिले के संदर्भ में पुरातात्विक पर्यटन स्थलो के संभावनाएँ

Dewcharan Gawaskar[1], Ramratan Sahu[2] & Shruti Dew Gawaskar[3]
[1]Research Scholar, [2] Associate Professor, [3]Shruti Dew Gawaskar
[1,2,3]Department of History, Dr C. V. Raman University, Bilaspur, India

Received: January 28, 2019 Accepted: March 05, 2019

प्राक्कथन– *छ.ग. में पुरातत्व सामाग्री जैसे स्मारक, भवनाशेष, मंदिर लगभग 600 इ.पू. से पाये जाते है। छ.ग. के प्रसिद्ध पुरातात्विक अवशेष में मुख्यतः प्रसिद्ध स्थल जैसे तालागांव में रूद्रा"ाव की विशाल प्रतिमा व देवरानी–जेठानी मंदिर, रतनपुर में सिद्धपीठ महामाया देवी का मंदिर एवं मल्हार का प्रसिद्ध पातालेश्वर महादेव का मंदिर है। सिरपुर में बौद्ध मंदिर के अवशेष प्राप्त है। भोरम.देव का मंदिर जो खजुराहो के नाम से प्रसिद्ध है तथा छेरका–छेरकी महल स्थित है जो विवाह महल का प्रतीक है। दंतेवाड़ा के बारसूर में स्थित विशाल भगवान श्री गणेश की विशाल प्रतिमा है। नागपुरा में जैन धर्म से संबंधित पार्श्वनाथ मंदिर है। राजीवलोचन का मंदिर गरिया.बंद जिले में स्थित है, जो विष्णुदेव को समर्पित मंदिर है। इन पुरातात्विक धरोहरों की वजह से छ.ग. में पर्यटकों एवं शोधकर्ताओं का गढ़ है। शोध का उद्दे"य पुरातत्व स्थलों, धार्मिक स्थलों का अध्ययन करते हुये पुरातात्विक स्.लों, धरोहर तथा स्मारकों के महत्व व विशेषताओं को जन–जन तक पंहुचाना।*

भाब्दकोष *– छ.ग. पुरातत्व स्मारक, मंदिर*

I. प्रस्तावना–

छ.ग. को प्राचीन समय में दक्षिण कोशल के नाम से जाना जाता था। को"ाल राज्य के राजा भानुमंत की एक पुत्री थी जिनका नाम कौशल्या था। पौराणिक प्रथाओं के अनुसार कौशल राज्य कौ"ाल्या के विवाह के अवसर पर अयोध्या के राजा दशरथ को दहेज में मिला, जिसके कुछ समय पश्चात यह राज्य श्री राम को प्राप्त हुआ एवं उनके उपरांत यह राज्य दो भागों में बांटा गया जिसके तहत उत्तरी कोशल लव तथा दक्षिण कोशल कुश को प्राप्त हुआ। समुद्रगुप्त के प्रयागप्रशस्ति में दक्षिणापथ के नाम से जाना जाता था एवं बस्तर क्षेत्र को चक्रकोट या भ्रमरकोट के नाम से जाना जाता था जिनके राजा क्रमशः महेन्द्र, व्याघ्रराज थे। लेखक हीरालाल काव्योपाध्याय के अनुसार जरासंध के राज्य में छत्तीस चर्मकार जाति छ.ग. में आकर छत्तीस घर बनाये जिसे आगे चलकर छत्तीसगढ़ के नाम से जाना गया। चीनी यात्री हेनसांग के अनुसार मौर्यकालीन पुरातात्विक अवशेष राजा अशोक ने अपने शासनकाल में सिरपुर में एक बौद्ध स्पूत का निर्माण करवाया जिसकी पुष्टि जबलपुर के रूपनाथ अभिलेख से भी प्राप्त होता ह। सरगुजा जिला में स्थित जोगीमारा तथा सीताबेंगरा नामक गुफा में दो अभिलेख प्राप्त हुये हैं मुख्यतः सुतनुका नामक देवदासी एवं उसके प्रेमी देवदत्त का वर्णन है। छ.ग. के प्रसिद्ध स्थलों एवं भगनावशेष, पुरातत्व सामाग्री, सिक्के, अभिलेख मंदिर के माध्यम से पुरावलोकन एवं अध्ययन करना। तथ्यों के संग्रहण के लिये सहभागी अवलोकन तथा साक्षात्कार की तकनीक का प्रयोग किया गया है।

II. साहित्य की समीक्षा

इस शोध कार्य को करने के लिये मेरे द्वारा शोध पटा, इंटरनेट पत्रिका एवं पुरातत्व गाइड, पुस्तक, मैगजीन आदि से जानकारी अर्जित किया गया।जिसका उल्लेख निम्नानुसार है–

1. **डॉ. पुरूषोत्तम लाल चंद्राकर–"छत्तीसगढ़ के पर्यटन की संभाव्यता एवं प्रत्याशा 2017"।**

लेख के अनुसार– छ.ग. के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों का अध्ययन किया गया है जिसमें पर्यटन स्थलों एवं उनकी संख्या तथा पर्यटकों की रूचि के ज्ञान हेतू दैव निर्दे"ान प्रणाली के कोटा निर्देशन का उल्लेख किया गया है। छ0ग0 पर्यटन स्थल को लेख अनुसार 4 भागों में विभाजित किया गया है–

1. बिलासपुर संभाग का पर्यटन
2. रायपुर संभाग
3. बस्तर संभाग
4. सरगुजा

बिलासपुर संभाग के तिफरा नामक स्थान पर कालीमाता का मंदिर स्थित है जिसमें भक्ता की भीड़ भारी मात्रा में रहती है।
बिलासपुर संभाग के रतनपुर नामक स्थान पर मॉ महामाया देवी का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है रतनपुर का धार्मिक दृष्टि से छ0ग0 में महत्वपूर्ण स्थान है।

लेख अनुसार–

1. बिलासपुर संभाग में– तालागांव में रूद्रा"ाव की विशाल प्रतिमा व देवरानी–जेठानी मंदिर, रतनपुर में सिद्धपीठ महामाया देवी का मंदिर एवं मल्हार का प्रसिद्ध पातालेश्वर महादेव, अमरकंटक, तुम्माण का शिव मंदिर, लाफागढ़ एवं चैतुरगढ़, पाली का मंदिर प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है।
2. सरगुजा संभाग– सरगुजा में स्थित अमृतधारा जलप्रपात, रक्सगंडा जलप्रपात, तमोरपिंगला अभ्यारण्य, मैनपाट, रामगढ़ का गुफा, सीताबेंगरा गुफा, गुरूघासीदास राष्ट्रीय उद्यान आदि पर्यटक स्थल हैं।
3. बस्तर संभाग– बस्तर संभाग के पारम्परिक त्यौहारों का उल्लेख किया गया है।
4. रायपुर संभाग–उल्लेख नही किया गया है।

2. छ.ग. ए.ट.ग्लांस–ए. लाला सुब्रहण्यम–" छ.ग. ए.ट.ग्लांस जनवरी 2013"

लेखानुसार– छ.ग. के किले, संग्राहलय,वन्य अभ्यारण्य का उल्लेख किया गया है। कवर्धा जिले में स्थित भोरमदेव मंदिर, डिंडेश्वरी मंदिर, पतालेश्वर मंदिर, बम्बलेश्वरी मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर आदि प्रसिद्ध मंदिरों का उल्लेख किया है।

3. जितेन्द्र कुमार–"दक्षिण कोशल से प्राप्त अभिलेख में मंदिर एवं जनकल्याणी जिर्माण–एक विश्लेषण 2013"

लेखानुसार– छ.ग. के प्राचीन राजवंशो का उल्लेख किया गया है जिसके अनुसार मौर्यवंश व सातवाहन वंश के अभिलेखों का वर्णन एवं समकालीन यात्री हेनसांग की यात्रा का उल्लेख है। जिसके अनुसार मौर्य सम्राट अशोक द्वारा स्पूत निर्माण एवं अभिलेखों का वर्णन किया गया है।दो अभिलेखों का प्राप्ति हुयी जो कि रामगढ़ के सीताबेंगरा, जोगीमारा गुफा में पया गया है। सातवाहन वंश में निमित अनेक पाषाण प्रतिमाएँ एवं काष्ठ स्तंभ का उल्लेख मिलता है जो कि संग्राहालय में सुरक्षित रखा गया है।गुप्त वंश के राजा समुद्रगुप्त द्वारा वाकाटक वंश के राजा व्याघ्रराज एवं महेन्द्र को पराजित किया जिसका उल्लेख समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति में मिलता है तथा दक्षिणकोशल के प्राचीन स्थापत्य कला मंदिर का उल्लेख किया गया। दक्षिणकोशल के प्राचीन राजवंशों में राजर्षितुल्य वंश, शरभपुरीय वंश, बस्तर का छिंदकनागवंश, कर्वधा का फणीनागवंश इत्यादि वंशो द्वारा छ0ग0 में शासकों का शासन रहा।

4. गुप्ता टी. सी. और मिर्जा एन.डी. –" छ.ग. में पर्यटन उद्योग और विपणन का विकास 2016"

लेखानुसार–पर्यटन स्थल दुनिया का सबसे बडा मनोरंजन स्थान है जिससे देश की आर्थिक स्थिति भी मजबूत होती है। आर्थिक दृष्टिकोण से पर्यटन और यात्रा तीन प्रमुख कार्यों में सहायता प्रदान करता है।

1. राज्य के अर्थव्यवस्था को बढाता है।
2. लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है।
3. राज्य की प्रगति एवं विकास में सहायक (4–5)

छ.ग. को धान का कटोरा के नाम से जाना जाता है। जिसमें 44प्रतिशत वन क्षेत्र है। देश के प्रभावी पर्यटन स्थलों की दृष्टि से छ.ग. एक समृद्ध क्षमता रखता है पर्यटकों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रस्थान करना पर्यटन कहलाता है। पर्यटन न केवल किसी एक स्थान से दूसरे स्थान जाना बल्कि ठहरने के दौरान सभी गतिविधियॉ सम्मिलित हैं।

5. संजय प्रसाद गुप्ता–"जलवायु परिवर्तन और छत्तीसगढ़ के मामलों के संदर्भ में मौलिक और ऐतिहासिक भवनों पर इसका असर 2013"

लेखानुसार– छ.ग. के पुरातात्विक स्मारकों में जलवायु व वर्षा का प्रभाव विभिन्न तरह से पडता है। जैसे तापमान, वर्षा की अधिकता, वायुदाब, आद्रता आदि। इन सब कारणों से राज्य की संस्कृतिक धरोहर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जो कि आने वाली पीढ़ियों के लिये उचित नही है। पुरातात्विक अवशेषों को संरक्षित रखना आवश्यक है।

6. डॉ. रीता गेबर्ट, एनी नमाला, जैन कुमार–"गरीबी प्रभाव आकलन रिपोर्ट छत्तीसगढ़ 2011"

लेखानुसार– छ.ग. के स्वास्थ्य, शिक्षा नीति, सम्पदा, गरीबी एवं आर्थिक स्थिति का उल्लेख है।

7. विकास चंद्र प्रधान–"श्रीपुरा एक आर्कियोलाजिकल सर्वेक्षण 2011"

लेखानुसार–सिरपुर बौद्ध धर्म का एक प्रमुख स्थल रहा है जिसका प्राचीन नाम श्रीपुर था। इस मंदिर का निर्माण सोमवंशी शासक हर्षगुप्त की विधवा वासटादेवी द्वारा बनवाया गया है। यह प्रमुख धार्मिक स्थल है। चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा सिरपुर का वर्णन किया गया है।जिसके अनुसार सिरपुर एक बौद्ध स्थल का केन्द्र था।यह लगभग 6वीं व 10वीं शताब्दी के समय प्रमुख बौद्ध स्थल रूप में था।सिरपुर में मनाये जाने वाले महोत्सव का वर्णन किया गया है। यहा लक्ष्मण मंदिर स्थित है जो कि 7वीं सदी में बना है यह बहुत ही आकर्षक एवं लाल ईंट के पत्थरों का प्रयोग कर बनाया गया है। सिरपुर के अनेक प्रसिद्ध स्थलों का भी वर्णन किया गया है जैसे–गंधे"वर मंदिर, आनंद प्रभु चूडी विहार तथा स्वास्तिक विहार।

8. एस.एन मनवानी–"रतनपुर के कलचुरी के मंदिर कला 1984"

लेखानुसार–रतनपुर के प्रसिद्ध महामाया मंदिर का वर्णन किया गया है इस मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में राजा रत्नदेव द्वारा बनवाया गया था। रतनपुर का प्राचीन नाम मणिपुर था जिसका उल्लेख पौराणिक ग्रंथ महाभारत में मिलता है।कलचुरियों के काल में रतनपुर का वैभव चरमोत्कर्ष पर था।

9. गीतांजली चंद्राकर–"भोरमदेव क्षेत्र के मंदिरों में स्थित मूर्तियों का युद्धनीतिक अध्ययन 2012"

लेखानुसार–भोरमदेव छ.ग. का एक प्रसिद्ध धार्मिक व पुरातात्विक स्थल है इसका निर्माण रामचंद्र राय द्वारा चंदेल शैली व नागर शैली में कराया गया था।जो मुख्यतः मध्यप्रदेश के खजुराहो से प्रेरित है अतः इसे छत्तीसगढ़ का खजुराहो भी कहा जाता है। इस मंदिर के गर्भगृह में भोरमदेव की मूर्ति है जो एक आदिवासी देवता हैं जिन्हे शिव का रूप माना जाता है मंदिर के बाहरी दीवारों पर कामसूत्र में लिप्त देवों की खुदी हुयी प्रतिमा स्थित है।

10. डॉ. के एस.गुरूपंथ के अनुसार–"छत्तीसगढ़ में पर्यटन एवं पर्यावरणीय प्रदुषण 2013"

छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना 1 नवम्बर 2000 को किया गया जिसमें छ.ग. का पर्यटन स्थल एवं पर्यटकों की जागरूकता बढो। पुरातात्विक अवशेष जैसे– मूर्ति, गुफा, भवन, स्मारक, किला, मंदिर पर्यटकों का मन मोह लेती है।

छत्तीसगढ़ के प्राकृतिक दृ"य एवं उनके द्वारा पर्यटन संवर्धन के लिये दशाओं के बारे में वर्णन किया गया है। एवं राज्य शासन द्वारा पर्यटन के क्षेत्र में किये गये विशिष्ट प्रयास, मूलभूत अंर्तसंबंध एवं मानव संसाधन का विकास, संस्थागत संरक्षण हेतु उपाय, पर्यटन की समृद्ध सम्भावना के क्षेत्र के बारे में वर्णन किया गया है।

III. अध्ययन का तर्क

छ.ग. में पुरातत्व सामाग्री जैसे स्मारक, भवनाशेष, मंदिर लगभग 600 ई.पू. से पाये जाते हैं। छ.ग. के प्रसिद्ध पुरातात्विक अवशेष में मुख्यतः प्रसिद्ध स्थल जैसे तालागांव में रूद्रि"व की विशाल प्रतिमा व देवरानी–जेठानी मंदिर, रतनपुर में सिद्धपीठ महामाया देवी का मंदिर एवं मल्हार का प्रसिद्ध पातालेश्वर महादेव का मंदिर है। सिरपुर में बौद्ध मंदिर के अवशेष प्राप्त है। भोरमदव का मंदिर जो खजुराहो के नाम से प्रसिद्ध है तथा छेरका–छेरकी महल स्थित है जो विवाह महल का प्रतीक है। दंतेवाड़ा के बारसूर में स्थित विशाल

भगवान श्री गणेश की विशाल प्रतिमा है। नागपुरा में जैन धर्म से संबंधित पार्श्वनाथ मंदिर है। राजीवलोचन का मंदिर गरियाबद जिले में स्थित है, जो विष्णुदेव को समर्पित मंदिर है। इन पुरातात्विक धरोहरों की वजह से छ.ग. में पर्यटकों एवं शोधकर्ताओं का गढ़ है। शोध का उद्दे"य पुरातत्व स्थलों, धार्मिक स्थलों का अध्ययन करते हुये पुरातात्विक स्थलों, धरोहर तथा स्मारकों के महत्व व विशेषताओं को जन–जन तक पंहुचाना।

IV. उद्देश्य

1. पुरातात्विक स्थलों के संरक्षण के लिये सरकार द्वारा रख–रखाव के लिये उचित प्रबंध करना।
2. पुरातात्विक स्थलों की सुरक्षा के लिये लोगों को जानकारी एवं प्रचार–प्रसार द्वारा सुझाव देना व अपील करना।
3. जलवायु परिवर्तन से होने वाले हानि से सुरक्षा प्रदान करना।
4. पुरातात्विक स्थलों में प्लास्टिक–पॉलिथीन के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाना।
5. अधिक से अधिक शोध पेपर ग्लोबल लेवल में प्रकाशन का होना।
6. राज्य के अर्थव्यवस्था को बढाता है।
7. राज्य की प्रगति एवं विकास में सहायक (4–5)

V. बिलासपुर का परिचय :–

प्रारम्भ में बिलासपुर भारत के सी.पी एवं बरार प्रांत के अंतगर्त आता था। बिलासपुर 'हर का नाम 17 'ताब्दी की मत्स्य महिला के नाम पर पड़ा था अहिला का नाम बिलासा था इसलिए बिलासपुर रखा गया। इसकी पु"ि इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया 1808 के खण्ड 8 के अनुसार सह बात प्रमाणित होता है। बिलासपुर के बारे में ऐसा मान्यता हैं कि यह पहले लम्बे समय तक मधुवारो की बस्ती रहा था। एवं बिलासपुरे जिले का गठन 1861 में हुआ था तथा बिलासपुर नगर निगम सन् 1867 में बना था। बिलासपुर की संख्या 1909 में 18937 थो जो ब्रिटिष राज्य के केन्द्रीय सूबा में आठवां बड़ा था। ऐतेहासिक रूप से देखा जाये तो बिलासपुर, रतनपुर के कलचुरी राजवंष का भाग था। मराठा राजवंष के समय 'हर का मूल स्वरूप सन् 1774 के आस–पास आया था। मराठा राजवंष द्वारा यहाँ किलो का भी निर्माण प्रारम्भ कराया गया था परन्तु वो पूरा नहीं हो सका। सन् 1854 में जब चर्चा में आया जब अंग्रेजों ब्रिटषसरकार द्वारा इंडिया कम्पनी ने इस क्षेत्र को तत्कालीन मराठा 'ासक के बिना वारिष के मृत्यु के उपरांत अपने अधिकार में ले लिया।

बिलासपुर का पर्यटन आकर्ण :–

कानन पेंडारी चिड़िया घर, कानन पेंडारी चिड़िया घर बिलासपुर जिला स्थित है। यह मुंगेली रोड पर स्थित हैं यह बिलासपुर से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर सकरी के पास एक स्थित है। यहाँ बहुत प्रकार पषु, पक्षी रखे गये हैं। यहां बच्चों के मनोरंजन के लिए खेलने हेतु झूला आदि बनाया गया है। यहाँ बहुत भीड़ लगी रहती है।

खूटाघाट बाँध रतनपुर : खूटाघाट बाँध रतनपुर पर स्थित हैं। इसकी स्थापना 1920–31 में किया गया था। यह खारंग नदी पर स्थित है। खूटाघाट का अन्य नाम संजय गाँधी जलाषय के नाम से जाना जाता है। खारंग नदी मनियारी नदी के सहायक नदी हैं।

रानी सती मंदिर : यह मंदिर गौरव पथ रिंग रोड नं. 2 पर स्थित है। इस मंदिर का नाम श्री राणी 'क्ति दादी मंदिर के नाम से जाना जाता है। यहाँ श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या में भीड़ लगी रहती हैं। यहाँ महिलाओं प्रतिदिन भजन गाकर राणी सती कही अराधना करती है। यहां प्रतिव"ि वा"िक उत्सव का आयोजन किया जाता हैं। एवं धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

काली मंदिर : यह मंदिर बिलासपुर के तिफरा में स्थित हैं यहाँ देवी क अनु"ठान व पूजन बहुत श्रद्धा से किया जाता है। यहां श्रद्धालुओं की नवरात्रि पर्व पर भीड़ लगी रहती है।

लुतराशरीफ :– लुतराषरीफ बिलासपुर में स्थित हैं बाबा सैय्यदइसांन अली 'ाह की दरगाह के रूप में प्रसिद्ध है। यह धार्मिक सौहाई से आस्था व श्रद्धा का पवित्र पावन स्थल का केन्द्र माना जाता है। ऐसी मान्यता प्रचलित है कि बाबा के दरगाह के कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं लौटती हैं उनकी मनोकामना अष्य ही पूरा हो जाता है। यहाँ सभी धर्मो के मानव आते हैं एवं अपनी मनोकामना के पूर्ति के लिए चादर चढ़ाते हैं। इसी कारण यह लुतरा 'रीफ अंचल आस्थ केन्द्र के रूप में प्रचलित हैं। यह स्थल बिलासपुर के सीपत बालौद मार्ग एवं ग्राम सीपत पर स्थित है। बाबा सैय्यद इंसान अली का जन्म 1845 में एक मुस्लिम परिवार में हुआ था। इनके दादा का नाम जौहर अली था तथा इनके परदादा कानाम सैय्यद हैदर अली साहब हुए। इनके नाना का नाम ताहिर अभी साहब था एवं उनके माँ का नाम बेगम जान थी। बाबा इंसान अली के नाम एक धार्मिक प्रवृत्ति के इसान थे। वे धर्म के प्रति उनकी आस्था गहरी थी। उन्होंने अपने जीवन में हज यात्रा करने का गौरव प्राप्त हुआ। बाबा सैय्यद इंसान अली पर उनके नाना जी के स्वाभाविक विचारधारा का प्रभाव पड़ा। इनका अधिक समय ननिहाल में ही बिता था और आगे समय में इनको बाबा सैय्यद इसान अली के नाम से लुतरा 'रीफ में प्रसिद्ध हुए। बाब हजरत 'ाह बाबा सैय्यद इंसान अली अलैह रहमतुल्ला के पूर्वज के बारे में ऐतेहासिक जानकारी प्राप्त नहीं होती कि ये कब छत्तीसगढ़ आये। लेकिन इस सम्बध में ऐसा कहा जाता है। कि सबसे पहले खानदान का बाफिला सैयद हैदर अलो बाबा दिल्ली से यात्रा करके भोपाल से सरगुजा आये और फिर बिलासपुर से रतनुपर पहुंचे तत्पष्चात् रतनपुर को छोड़कर बछौद गांव को अपना कर्मस्थली बनाया। कुछ लोगों का मानना है कि बाबा हजरत बाबा इंसान एवं इनके दादा सैय्यद जौहर अली साहब अपने पूरे खानदान के साथ बिलासपुर में रहते थे। बाबा हजरत 'ाह बाब सैय्यद इंसान अली का विवाह खमरिया गांव के गौटिया खानदान के जनाबनाहिउनुद्दीन साहब की बेटी उमेद बी के साथ विवाह हुआ। और इनके निकाह के अवसर पर उन्हें बहुत सी जमीन की जमीदार प्राप्त हुये जिनमें उन्हें लुतरा गांव भी मिला। और यही सथल बाबा की कर्मस्थली के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

बाबा हजरत इंसान अली को परिवारिक जीवन में क"ट पूर्ण बिता, उनके घर के बेटी पैदा हुई और उनकी बेटी का कम उम्र में इंतकाल हो गया था। और वह बेटी के दुख में परेषानी पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे।

देवरानी–जेठानी मंदिर बिलासपुर :–

रायपुर से बिलासपुर राजमार्ग पर 85 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ग्राम–ताला पर स्थित हैं। यह मंदिर अनूठी और अभूत मूर्तियाँ यहाँ प्राप्त हुई हैं। 'ाव भगवान की दो–दो मूर्तियाँ देवरानी–जेठानी के नाम से विख्यात है। भारतीय कला म अपने ढंग एकमात्र ज्ञात प्रतिमा महाकाल रूद्र षिव की है। यहाँ 1 मीटर चौड़ा और ढाई मीटर ऊँची जीव जंतुओं की मुखातियों से बने अंग व प्रत्यंगों वाली प्राचीन मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। कई विद्वानों का मत हैं कि यहाँ बारह राषियों के आकार पर इसका नाम कालपुरू"ा भो माना जाता है। यहाँ कि मूर्ति में रौद्र भाव साफ नजर आते है। एवं प्रतिमा संपादस्थानक मुड़ा पाया गया है। प्रतिमायों के रूपांकन में गिरगिट, सिंह, कछुआ, मयूर, केकड़ा, मछली एवं मानव मुखो की अभूत संयोजन हैं। मूर्ति के सिर पर लपटे हुये 2 नाग पगड़ी के समान प्रतोत होती है। एवं नीचे मुहँ किये गिरगिट से नाक बनी है। एवं गिरगिट के दोनों पैर ने भौहों का आकार ले लिया हैं। गिरगिट का सिर नाक का अगला हिस्सा बना हुआ हैं। मेढ़क के बडे अण्डे से गोलक बना हुआ है तथा बड़े आकार के मेढक के खुले मुख से नेत्र पब्ल बना हुआ हैं। छोटे–छोटे मछलियों के मूँछे और निचे वाला होठ बना है। मयूर कान की जगह स्थापित है। मगर से कंधा बना हुआ है। हाथी की सूड से भुजाएँ बना हुआ है। एवं हाथों की ऊंगलिया सांप के मुँह के आकार कि हैं। मानव के मुखातियाँ से वक्ष और उदर बना हुआ है। कछुएँ की पिछले कही हिस्से से रिष्न बना हुआ है और उससे जुड़े अलगे पैरों से अण्डकोष बना है। दोनों परौ पर सिंह की मुख बना हुआ है। मोटे–मोटे पैर हाथी के अलगे पैर से समान हैं प्रतिमा के दोनों कंधों के ऊपर माना ऐसा प्रतीत होता हैं कि 2 महानाग रक्षक की तरह फन फैलाए नजर आते हैं। प्रतिमाओं को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि 'ाव मत, वृक्ष योग सिद्धांतों का प्रभाव और समन्वय दिखाई पड़ता है।

बिलासपुर जिले के पर्यटन दृ"िट से देखा जाये तो सर्वप्रथम ताला गाँव की रूद्र षिव प्रतिमा की ओर ध्यान केन्द्रित होता है, देवरानी–जेठानी मंदिर के संरक्षण की दृ"िट से राज्य सरकार द्वारा कई प्रकार योजनायें सरकार द्वारा प्रस्तावित व मंजूरी दी गई है। पर्यटकों के लिए यहाँ सड़क, पेयजल एवं छायादार स्थलों का निर्माण करवासा गया है। पर्यटन स्थल की खूबसूरती निखारने के लिए उद्यान, फव्वारे एवं मनियारी नदी में नौकायान का व्यवस्था किया गया है।

सिंचाई विभाग द्वारा 30 लाख की लागत से उद्यान निर्माण एवं एक करोड़ की लागत से मनियारी नदी के दोनों आरे 150–150 मीटर घाट का निर्माण कार्य किया गया हैं। एवं 11 लाख की लागत से मनियारी नदी पर ताला एनीकट बनाया गया हैं। एवं ताला ग्राम पहुँचाने के मार्ग पर वृक्षोरापण कराया गया हैं। हरियाली को ध्यान में रखते हुये ताला ग्राम से कुछ दूरी पर मनकुदीप स्थित हैं जो ईसाईयों का पवित्र स्थल है। यहाँ प्रतिव"ा ईसाई धर्म वालों का मेला लगता है। एवं मसीही मेला का आयोजन होता है। मदकू द्वीप तीनो ओर से षिवनाथ नदी एवं मनियारी नदी से घिरा हुआ है। द्वीप के चारो ओर 1 करोड़ रूपय खर्चा करके पीचिंग द्वारा नदी के कटाव को रोका गया है। षिवनाथ नदी पर 15 करोड़ की लागत से एनीकट का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इसके साथ–साथ नदी के दोनों और घाट का निर्माण कराया जा रहा हैं। लगभग 50–50 मीटर तक घाटा का निर्माण किया जा रहा है। देवरानी–जेठानी मंदिरों खोज 1873–74 में जे.डी.वैगलर ने कि है। जो प्रसिद्ध पुरात्तवविद अक्लेजडर कनिधम के सहायक थे। इतिहासकारों के अनुसार तालागाँव 7–8 वीं 'ताब्दी के ईस्वी की हैं।

तालागाँव से थोड़े ही दूर में ही सरगावं धूमनाथ का मंदिर हैं। इस मंदिर में भगवान किषरी षिव का स्मारक है। यह स्थान मल्हार स 18 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ताला ग्राम की खुदा ईयों से यह प्राप्त होती है। कि यहाँ के राज वषों ने रूद्र षिव के पूजारी रहे होगें। और 'ाव धर्म के प्रचारक रहे होगें।

देवरानी मंदिर :–

यह मंदिर भगवान षिव को समर्पित है।

VI. छ.ग. के प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थल

दंतेश्वरी मंदिर देतवाड़ा :–

दंतेष्वरी मंदिर का निर्माण 14वीं सदी में किया गया है। इस मंदिर का निर्माणकर्ता अन्नमदेव है जो काकतीय वंष का 21 सक हैं यह मंदिर डंकिनी 'ांखिनी के नदी के संगम पर स्थित है। अंग्रेजी द्वारा माड़िया जन जाति द्वारा नलबलि प्रथा के हस्तक्षेप पर में दिया विद्रोह 1842–1863 ई.सी. तक हुआ था। यह मंदिर दंतेवाड़ा में स्थित है।

बारसूर–मामा भांजा मंदिर :–

बारसूर का प्राचीन नाम चक्रकोट या भ्रमकोट नाम था यह प्रारम्भ में छिदंकनागवंषियों की राजधानी थी यहा मामा भांजा मंदिर स्थित है। बत्तीसा मंदिर एवं चप्रदित्य मंदिर भी स्थित हैं। जिला दंतेवाड़ा पर स्थित हो चन्द्रादित्य मंदिर के प्रागण पर गणेष जी विषाल मूर्ति प्राप्त हुई हो एवं प्राचीन चडांदित्य समुद नामक सरोवर बारसूर में स्थि है। ढोबकल गणेष प्रतिमा भी प्राप्त हुई हैं।

- **चैतुरगढ़ का किला** :– चैतुरगढ़ किला कोरबा क्षेत्र में स्थित हैं। और इसी के चोटी पर एक किला स्थित हैं जिसे चैतुरगढ़ का किला कहा जाता है। इस किले का निर्माण बाहरेन्द्र साय द्वारा 14वीं 'ताब्दी में करवाया था। पैंगलर जो ब्रिटिष अधिकारी थे। उन्होंने इसे दुर्गन व अभेध किला कहा हैं। इसकी सुंदरता के कारण इसे छत्तीसगढ़ का कष्मीर कहा जाता हैं।
- **प्राचीन शिव मंदिर** :–प्राचीन षिव मदिर का निर्माण राजा विक्रमादित्य बाणवंषीय 'ासन द्वारा करवाया गया हैं एवं इस मंदिर का जीर्णोद्धार–जालल्य देव ने करवाया जा कि कलचुरी 'ासक था।
- **लाफागढ** :– लाफागढ़ कोरबा क्षेत्र में स्थित हैं। इस छ.ग. का चित्तौड़ कहा जाता है। दुर्मन पहाड़ियों पर स्थित होने कारण इसे छ.ग. का चित्तौड़ कहा जाता हैं।
- **कुदुरमाल** :–कुदुरमाल में गुरू मुक्तामणि साहब के द्वारा कबीरमठ का स्थापना किया गया था जो कोरबा में स्थित हैं। यह कबीर पंथी मार्गियों का तीर्थ स्थल हैं। यहाँ कबीर पंथी के तीन गुरूओं की समाधि स्थित हैं।

- **कुलेश्वर महादेव का मंदिर (राजिम)** :–कुलेष्वर महादेव का मंदिर राजिम में स्थित हैं। यहाँ महानदी पैरी नदी एवं सोंढुर नदी का संगल स्थित हैं। यहाँ प्रति व"ा माघ पूर्णिमा से षिवरात्रि तक मेला का आयोजन होता है।
- **शिवरीनारायण** :–यह रचान जांजगीर–चापां में स्थित हैं। यहाँ पर महानदी, षिवनाथ नदी एवं जोक नदी का संगम स्थित हैं। षिवरीनारायण में नर नारायण मंदिर, चंडचूड एवं जगन्नाथ मंदर स्थित हैं। एवं कवि कुमार पाल ने प्रसिद्ध चंडचूड मंदिर का निर्माण करवाया था। यहा माता 'ाबरी का आश्रम है जहाँ भगवान राम ने एवं लक्ष्मण ने जूठे बेर खाये थ। एवं अइभूत किस्म का वट वृक्ष पाया गया है जिसका पत्ता दोने के समान है।
- **रामटेकरी मंदिर रतनपुर** :–इस मंदिर का निर्माण 18 'ताब्दी में बिन्धाजी भोसले द्वारा कराया गया हैं। यह रतनपुर में स्थित है।
- **लखनी मंदिर** :– यह मंदिर का निर्माण 12वीं 'ताब्दी में कलचुरी 'ाासक रत्नदेव तृतीय के प्रधान मंषी गंगाधर द्वारा बनवाया गया था।
- **सती चौरा** :– इसका निर्माण 18वीं 'ताब्दी किया गया था। उमाबाई बिम्धाजी भोसले की पत्नी थी। उमा बाई के सती होने कारण ही सती चौरा का निर्माण किया गया था। उमा बाई को छ.ग. प्रथम सती महिला होने का गौरव प्राप्त हुआ है।
- **मड़वा महल** :– मड़वा महल का निर्माण कर्ता फणिनागवंषीय 'ाासन रामचंददेव था। सन् 1349 जनवाया गया था। मड़वा महल को दूल्हा महल भी कहा जाता है। महाराजा धरमराज द्वारा कर्वधा महल के मुख्य प्रवेष द्वारा पर हाथी दरवाड़ा का निर्माण करवाया गया है।

VII. शोधप्राणाली

1. छ.ग. के पुरातात्विक अध्ययन के लिए मेरे द्वारा प्रमुख पर्यटन स्थलों का भ्रमण कर अवलोकन का कार्य करूगा।
2. डाटा संग्रहण करने हेतु प्राथमिक स्त्रोतो का प्रयोग करूँगा जिसमें परीक्षण विधि द्वारा, मनोवैज्ञानिक विधि, मौखिक संवाद इत्यादि का प्रयोग कर अवलोकन करूँगा।
3. सूचनाओं के संग्रहण एंव संकलन के लिए द्वितीयक स्त्रोतो का प्रयोग करूँगा जिसमें पुस्तक एंव ग्रंथ का प्रयोग, प्र"ास्ति पत्र, फोटोग्राफ, पत्रिकाएँ, आत्मकथा, टेपरिकार्डिंग, प्रमाण पत्र, व्यक्तिगत पत्र, सरकारी एंव अन्य कार्यालयों द्वारा प्रका"ित ग्रंथो का उपयोग करूँगा।
4. तथ्यो का संग्रह करने हेतु कुछ प्रमुख ग्रंथालय जैसे–राघवेंद्र राव ग्रंथालय, गुरूघासी दास संग्रलय एंव डॉ. सी. वी. रमन वि"वविद्यालय से डाटा का संग्रहण कर अपने शोधकार्य को पूरा करूँगा।

VIII. अपेक्षित परिणाम

1. पर्यटन स्थलों में रूकने हेतु हॉटल की सुविधा उपलब्ध होना चाहिये।
2. खाने–पीने की सुविधा एवं सुगम यात्रा हेतु मार्ग की सुविधा उपलब्ध होना चाहिये।
3. प्रचार–प्रसार को बढावा देने के लिये सोशल साइट में पुरातात्विक स्थलों के मनोरम दृश्यों का विश्लेषण करते हुये लोगों को घुमने हेतु आकर्षित करना।
4. यात्रियों के सुविधा हेतु पर्यटन स्थलों में सहायता केन्द्रों का खोला जाना।
5. लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है।

Acknowledgment

किसी भी कार्य की सफलता किसी एक व्यक्ति के प्रयास का प्रतिफल नहीं हो सकता है। मेरे 'षोध कार्य में मेरे प्रयास के अविरिक्त जिनका अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ है। उनके प्रति आभार व्यकत करना चाहती हूँ। सर्वप्रधम मैं उपने मार्ग निर्देषक अद्धेय श्रीमान डां. रामरतन साहू के प्रति हृदय से आभारी हूँ। जिनके मार्ग दर्षन एवं स्नेहिल व्यवहार के जलस्वरूप इस लघु 'षोध को मूर्त रूप दिया जा सकता है।

संदर्भ

1. डॉ. पुरूषोत्तम लाल चंद्राकर–"छत्तीसगढ़ के पर्यटन की संभाव्यता एवं प्रत्याशा 2017"।
2. छ.ग. ए.ट.ग्लांस–ए. लाला सुब्रहण्यम–" छ.ग. ए.ट.ग्लांस जनवरी 2013"
3. जितेन्द्र कुमार–"दक्षिण कोशल से प्राप्त अभिलेख में मंदिर एवं जनकल्याणी जिर्माण–एक वि"लेषण 2013"
4. गुप्ता टी. सी. और मिर्जा एन.डी. –"छ0ग0 में पर्यटन उद्योग और विपणन का विकास 2016"
5. संजय प्रसाद गुप्ता–"जलवायु परिवर्तन और छत्तीसगढ़ के मामलों के संदर्भ में मौलिक और ऐतिहासिक भवनों पर इसका असर 2013"
6. डॉ. रीता गेबर्ट, एनी नमाला, जैन कुमार–"गरीबी प्रभाव आकलन रिपोर्ट छत्तीसगढ़ 2011"
7. विकास चंद्र प्रधान–"श्रीपुरा एक आर्कियोलाजिकल सर्वेक्षण 2011"
8. एस.एन मनवानी–"रतनपुर के कलचुरी के मंदिर कला 1984"
9. गीतांजली चंद्राकर–"भोरमदेव क्षेत्र के मंदिरों में स्थित मूतियों का युद्धनीतिक अध्ययन 2012"
10. डॉ. के एस.गुरूपंथ के अनुसार–"छत्तीसगढ़ में पर्यटन एवं पर्यावरणीय प्रदुषण 2013"